शोधार्थी : साजिद अली
शोध निर्देशक : डॉ. अजय कुमार नावरिया
विभाग : हिन्दी
विषय : मोहन राकेश के कथा–साहित्य में शहरी जीवन के अन्तर्विरोध

शोध–सार

मोहन राकेश नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भकारों में गिने जाते हैं। वे अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति और भाषा शैली के कारण हिन्दी जगत में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होने जिस जीवन को जिया, उसका आइना उनका समस्त साहित्य हैं अपने कथा–साहित्य के अधिकतर पात्रों में वे स्वयं दिखाई पड़ते हैं इसलिए उनके कथा–साहित्य में उन्हें ढूँढना कोई कठिन कार्य नही है। उनका भोगा हुआ यथार्थ उनके कथा–साहित्य में परिलक्षित होता है। उनकी रचना–दृष्टि का सीधा सम्बन्ध आस–पास जिये जा रहे जीवन की विड़म्बनाओं को झेलते हुए व्यक्तियों से था।

मोहन राकेश का अधिकांश समय शहरों में व्यतीत हुआ इसी कारण उनके कथा–साहित्य का अधिकतर परिवेश दिल्ली, मुम्बई, शिमला, लाहौर तथा अमृतसर आदि बड़े शहरों का है। उनके कथा–साहित्य के पात्र महानगरीय घुटन, कुंठा, अकेलापन, असुरक्षा, भय तथा अजनबीपन की अभिशप्त ज़िन्दगी जीने के लिए अभिशप्त हैं। उनके कथा–साहित्य के पात्र इस घुटन भरी ज़िन्दगी से उभरने के लिए कॉफी हाऊस, रेस्त्रां, क्लब, थोथे सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सड़कों पर लम्बी पैदल यात्रा करते दिखाई पड़ते हैं।

मोहन राकेश ने अपने कथा–साहित्य में पारिवारिक विघटन के यथार्थ चित्र उकेरे हैं। उनके कथा–साहित्य में नई पारिवारिक संरचना से पारिवारिक जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। उनके यहाँ परिवार का टूटना केवल पारिवार का टूटना न होकर व्यक्ति का टूटना है। वास्तव में उन्होने पारिवारिक विघटन को केवल देखा ही नही था, अपितु उसे भोगा भी था। वे अपने कथा–साहित्य में पारिवारिक विघटन के साथ–साथ घर की भी तलाश करते नजर आते हैं। उनके यहाँ व्यक्ति, परिवार से अलग होने के पश्चात् फिर उससे जुड़ने की इच्छा व्यक्त करता दिखाई देता है।

मोहन राकेश ने अपने कथा–साहित्य में स्त्री–पुरूष सम्बन्धों का सूक्ष्म विश्लेषण किया है। वे स्त्री–पुरूष के बनते–बिगड़ते सम्बन्धों के कथाकार थे। इसके पीछे भी यही

तर्क दिया जा सकता है कि उनका दाम्पत्य–जीवन विविधताओं से भरा रहा। वे जिस घर की तलाश मे थे, वह उन्हे तीसरी पत्नी अनीता के रूप में बहुत बाद में जाकर मिला। उनका दाम्पत्य–जीवन उनके कथा–साहित्य में साफ–साफ देखा जा सकता है। इसी कारण उनके कथा–साहित्य के स्त्री–पुरूष सम्बन्धों में अजीब सी गंध आती है, जो उनको आपस में मिलने नहीं देती। वे दाम्पत्य–जीवन को जीते नही अपितु उसे बोझ की तरह ढोने को मजबूर हैं।

मोहन राकेश ने विभाजन की त्रासदी को स्वयं झेला था। उन्होने इसे अपनी आँखों से देखा था। उनकी 'कंबल', मलबे का मालिक' तथा 'क्लेम' कहानियाँ विभाजन के समय की विभीषिका को हमारे सम्मुख ईमानदारी और यथार्थ के पैमाने पर रखती हैं। उन्होने अपने लेखन में सन्तुलित दृष्टिकोण को अपनाया है तथा बिना किसी भेदभाव के साम्प्रदायिकता जैसे विषय पर कहानियाँ लिखी हैं। उन्होने स्वतंत्रता के समय की साम्प्रदायिकता, विभाजन तथा शरणार्थी कैम्प में रहने वाले शरणार्थियों की समस्याओं को अपनी कहानियों में बुलंद आवाज दी है।

मोहन राकेश की भाषा–शैली उनके कथा–साहित्य का एक अभिन्न अंग है। वे अनुभूति और संवेदनाओं के अनुरूप ही भाषा का निर्माण करते हैं, जिसके कारण उनकी भाषा व्यावहारिक बन गई है। उनके यहाँ भाषा पात्रानुकूल है। उनकी भाषा कहीं–कहीं द्विअर्थक बन गई है, जो व्यंग्य का निर्माण करती है। उनकी व्यंग्यात्मक भाषा में अजीब पैनापन है जो अत्यंत सटीक और उद्देश्यपूर्ण है। उन्होने जीवन की सूक्ष्म–संवेदनाओं और चेतना के स्तरों को उद्घाटित करने के लिए प्रतीकों का सार्थक प्रयोग किया है।

उनके यहाँ लोकभाषा के शब्द बिना किसी समस्या के मानव–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। उनके कथा–साहित्य में अरबी–फारसी शब्दों का भी प्रचलन है। उन्होने मुस्लिम परिवेश में अरबी–फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग किया है जो अनावश्यक नही लगता है। उन्होने मुहावरों का प्रयोग करके अपने कथा–साहित्य को अधिक जीवंत गतिशील और प्रभावशाली तथा सम्प्रेषणीय बना दिया है। महानगरीय प्रभाव के कारण उनके यहाँ भाषा का अधिकतर प्रौढ़ तथा शुद्ध रूप ही मिलता है। पंजाब जन्मस्थली होने के कारण उनके यहाँ कहीं–कहीं पंजाबी शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। उनकी भाषा में व्यक्ति मन की उलझन, बेचैनी, घुटन तथा छटपटाहट को प्रदर्शित करने की अदम्य शक्ति है।